उपसंहार

उपसंहार

''सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन'' के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है –

सुरेंद्र वर्मा जी का व्यक्तित्व और कृतित्व अपनी जीवन यात्रा के विविध पहलुओं से गुजरता हुआ परिलक्षित होता है। समकालीन साहित्यकारों या उपन्यासकारों की रचनाओं में जो नारी का चित्रण हुआ है, आज आप बीती है, वर्मा जी का रचना संसार इसका प्रतीक है। वर्मा जी का व्यक्तित्व उच्चकोटि का दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने हिंदी साहित्य संसार को उच्चकोटि की वैविध्यपूर्ण तथा सारगर्भित रचनाएँ प्रदान की है। इसी तरह वर्मा जी ने लेखक के रूप में अलग पहचान बनायी है। नारी स्वतंत्रता के समर्थक होने के कारण नारी मन को बड़ी चतुराई और न्यायपूर्णता से अपने साहित्य में अंकन किया है। वर्मा जी प्रतिभासंपन्न और स्पष्टवादी साहित्यकार हैं। उनका अधिकतर समय नगरों, महानगरों में बीता है। इसी कारण उनके साहित्य में ज्यादातर महानगरीय जीवन का चित्रण दिखाई देता है। एक सशक्त उपन्यासकार और नाटककार के रूप में जाने जानेवाले वर्मा जी आत्म-प्रचार से रहित हैं। उनकी परिश्रमवृत्ति, आत्मविश्वास से परिपूर्ण महत्त्वाकांक्षी वृत्ति का असर उनके साहित्यीक रचनाओं में दिखाई देता है। उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण पहलुओं ने उनके जीवन के आंतरिक और बाह्य पक्ष को उजागर किया है, इसी तरह वर्मा जी एक सृजनशील साहित्यकार हैं। युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से वाणी दी है।

वर्मा जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में नारी स्थिति एवं समस्या का चित्रण किया है । उन्होंने कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, एकांकी, व्यंग्य आदि विधाओं में भी लेखन किया है। उनका समस्त रचना साहित्य जीवन की वास्तविकता और आदर्शवादिता की नींव पर खड़ा है। अपने साहित्य में चित्रित चरित्रों के माध्यम से उन्होंने समाज के सामने मानवीय जीवन के आदर्श रूप को रखने का प्रयास किया

है। इसलिए उनका साहित्य जनप्रिय हुआ है। पुरुष होते हुए भी उनके साहित्य के केंद्र में ज्यादातर नारी चित्रण दिखाई देता है। वर्मा जी स्त्री-पुरुष समानता के पक्षधर हैं। उनके साहित्य में यौन सुख की चाह का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है। उनके साहित्य से स्पष्ट होता है कि वे बंधन को नहीं मानते। उनके साहित्य में जीवन की अनेक समस्याओं का और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सबसे ज्वलंत एवं संवेदनशील प्रश्न उठाएँ हैं और उसे यथार्थ की अधिकतम संभावनाओं के बीच सतर्कता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य की भाषा अत्यंत प्रवाही है। उनका साहित्य अनुभूति से ओत-प्रोत होने के कारण उसे बहुत प्रसिद्धि मिली है। जिससे उनके बहुआयामी सृजनशीलता का परिचय प्राप्त होता है। उनके कृतियों को यथोचित सम्मान भी मिला। पुरस्कारों के साथ-साथ जनप्रियता-पाठकों की प्रशंसा भी पाने में वर्मा जी सफल रहे हैं। क्योंकि आज अनुसंधान के क्षेत्र में उस पर शोध कार्य चल रहा है। यही इसका प्रमाण है।

द्वितीय अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैं कि विवेच्य उपन्यासों की भाषा अधिक सहज, सरल और रोचक है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की विविधता चित्रित की है। उनके द्वारा चुने गए विषय जीवन के हर एक पहलु के सही-सही दर्शन करवाते हैं। उनमें नाममात्र के लिए भी कृत्रिमता का स्थान नहीं दिखाई देता। वर्मा जी ने यथार्थवादी उपन्यासों की विषयवस्तु को स्पष्ट किया गया है। इसमें सेक्स, अवैध यौन संबंध, व्यसनाधिनता, पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण आदि विषयों के जरिए महानगरीय जीवन के ज्वलंत प्रश्नों को अत्यंत प्रभावी ढंग से व्यक्त करने का प्रयास किया है। वर्मा जी की नारी स्वतंत्र है, उसे किसी का बंधन नहीं है। उनकी दृष्टि से आज की नारी पुरुषों के कंधों से कंधा लगाकर अधिकार संपादन कर रही है।

'अंधेरे से परे' इस उपन्यास में जित्तन नामक युवक संत्रस्त, निराशाजनक, कुंठित विचार, अकेलेपन से पीड़ित दिखाया गया है। बिंदो आर्थिक

स्वावलंबन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण अपने जीवन को अच्छा या बुरा बनाने के लिए स्वतंत्र है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा अविवाहित मातृत्व ग्रहण करने का अधिकार चाहती है। इस तरह कुँवारी माँ में नैतिकता की नयी दृष्टि झलकती है, जिसका निरुपण लेखक बड़ी सूक्ष्मता से करता है। वर्षा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए विवाह की संस्था में बदलाव चाहती है। परंपरागत वर्जनाओं की मुक्ति नारी को नवीन समस्याओं में बाँधे हुए है।

विवेच्य उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों की पर्तों के भीतर छिपे हुए प्रेम और काम की तहों को अलग कर उन्मुक्त संबंधों के औचित्य को स्थापित करता है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा विडंबनापूर्ण सामाजिक जीवन से दूर चली जाना चाहती है, वह सारे बंधनों को तोड़कर स्वेच्छा से नया जीवन प्रारंभ करने के लिए निकल पड़ती है। 'अंधेरे से परे' उपन्यास में दांपत्य जीवन में बिखराव आने से सोमू बाल्यावस्था से ही माता-पिता द्वारा उपेक्षित एवं हीनता-बोध ग्रंथि से ग्रस्त है। वर्मा जी ने स्त्री-पुरुष संबंधों की व्याख्या एक नये धरातल पर की है। आज पुरुष वेश्या की सहायता से महानगर की धनाढ्य, पूँजीपति औरतें, जो अधेड़ उम्र की हैं, अपने पति से यौन अतृप्ति के कारण घायल बनकर पुरुष वेश्या के माध्यम से यौन तृप्ति का मार्ग तलाशती हैं, जो पाश्चात्य संस्कृति की देन है।

तृतीय अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैं कि वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रित नारियाँ पाश्चात्य नारी संस्कृति के प्रभाव में आकर भारतीय संस्कृति के कटघरे को तोड़ती हुई दिखाई देती है। उन्होंने दांपत्य जीवन, स्वतंत्र अस्तित्व की धारणा आदि का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही विवाहपूर्व एवं विवाहबाह्य अवैध यौन-संबंध रखनेवाली नारी, आधुनिक नारी आदि अनेक नारी को यथार्थता के साथ वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। पति की निष्क्रियता के कारण दांपत्य जीवन में बिगाड़ आ रहा है। आज की नारी स्वच्छंदी वृत्ति की है। अब नारियाँ विवाह बंधन को अस्वीकार करके विवाहपूर्व मातृत्व को स्वीकारना पसंद करती हैं।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कई नारियाँ अपने कैरियर के पीछे पड़ी हुई तो कई नारियाँ परंपरागत बंधनों को तोड़ने के लिए तथा उन्मुक्त यौन संबंध रखने के लिए लालायित हैं। उपन्यास में कई जगह तलाक पीड़ित नारी के दर्शन भी होते हैं। परिवार में कलह होने के कारण बच्चों तथा पति के प्रति आज की नारी में उदासीनता दिखाई देती है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा, 'अंधेरे से परे' की बिंदो और मधु, 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की सभी नारियाँ स्वच्छंद प्रकृति के पात्र हैं। उनके सम्मुख अपनी देह तृप्ति की एक मात्र लालसा है, जिसका शमन करने में उनके पति अक्षम है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा माँ बनना चाहती है और वासना से पूरित सारे आदर्शों एवं परंपरागत मूल्यों से चिढ़कर विद्रोह की भूमि पर नैतिकता को चुनौती देती हुई नई चेतना का मंत्र-जाप करती है। साथ ही अपने अस्तित्व एवं व्यक्ति स्वातंत्र्य के मूल्यों को भी महत्त्व देती है। 'अंधेरे से परे' की बिंदो और मधु अपने बच्चों के प्रति विरक्ति प्रकट करती हैं। महानगरीय परिवेश से जुड़े नारी का यथार्थ चित्रण भी उन्होंने किया है। वर्मा जी ने अपनी रचनाओं में अनेक स्वानुभूत सच्चाईयों को उजागर किया है। कहीं-कहीं आदर्शात्मक नारी रूपों का चित्रण हुआ है।

चतुर्थ अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैं कि वर्मा जी के उपन्यासों के विवेचन से यह बात सामने आती है कि नारी किसी भी जगह समस्या से मुक्त नहीं है। नारी शिक्षित होकर भी अपने जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं का हल नहीं कर पाई है। प्रेम भी आज की नारी के लिए एक समस्या बन गई है। आर्थिक समस्याओं में उलझी हुई यह नारियाँ प्रतिकूल परिस्थितियों से राह निकालने की कोशिश करती हुई नजर आती हैं, जैसे - 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा। उक्त उपन्यासों के अकेलेपन से पीड़ित पात्र अपना अकेलापन काटने के लिए काम में जुड़ जाते हैं, नशापान और अनैतिक संबंधों के अधीन होते हैं। नारी की अशिक्षा और अज्ञान के कारण आज पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच का अंतर तथा संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। नई पीढ़ी पुराने खयाल, परंपरा का इतना आदर नहीं करती जितना आदर पुरानी पीढ़ी करती है। दहेज की समस्या ने आज उग्र रूप धारण कर लिया है।

दहेज देने के लिए रुपयों का प्रबंध न होने के कारण बहुत-सी युवतियों को शादी योग्य उम्र होते हुए घर में बैठना पड़ रहा है। इसी कारण माता-पिता चैन से जीवन जी नहीं पातें। यहाँ दांपत्य जीवन में अभाव, घुटन, टूटन और उनकी आर्थिक विषमताओं की समर्थ झांकी प्रस्तुत की है। पति-पत्नी के बीच तान-तनावों की कारणमीमांसा यथार्थता के साथ चित्रित करने का प्रयास भी किया है। इसका दूसरा भी कारण है, यौन इच्छाओं से प्रेरित युवतियाँ, अपने पति से खुश न होने के कारण यौन-संबंधों की इच्छा पूर्ति के लिए काफी रुपये खर्च करती हैं। आज महानगरों में पुरुष वेश्या की प्रवृत्ति का प्रचलन तेज रूप धारण कर रहा है। इस प्रकार वर्मा जी ने नारी के प्रति पुरुष के हीन दृष्टिकोण का चित्रण किया है। साथ ही पुरुष द्वारा उसका हो रहा अधिकार का हनन भी दिखाया है और नारी को उसके 'स्व', अस्मिता, अधिकार के प्रति सचेत किया है। आज धर्म का स्वरूप बदल रहा है। धर्म के साथ विभिन्न प्रकार के कर्मकांड, बाह्याडंबर तथा अंधविश्वास जुड़ गए हैं। साथ ही अनेक नारी समस्याओं के समाधान भी वर्मा जी ने प्रस्तुत किये हैं।

पंचम अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैं कि सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों में सरस, सहज अभिव्यक्ति विचारों के द्वारा शिल्प में विविधता चित्रित की है। विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु का आरंभ वर्णनात्मक, घटनात्मक, आत्मकथात्मक शैली द्वारा हुआ है। विकास में नारी जीवन के विभिन्न अंगों की चर्चा की है। चरित्र चित्रण में उनके उपन्यासों के पात्र युगीन परिवेश को रुपायित करते हैं। ये पात्र समाज के अलग-अलग वर्गों से आए हैं। प्रधान पात्र और गौण पात्रों में उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग के पात्रों का चरित्र-चित्रण कर उनकी विशेषताओं को चित्रित किया है।

कथोपकथन से कथावस्तु का विकास तो हुआ ही है, उसके साथ चरित्रों की व्याख्या भी हुई है। कथोपकथन के द्वारा सुरेंद्र वर्मा ने देशकाल वातावरण का निर्वाह किया है। विवेच्य उपन्यासों के संवाद स्वाभाविक, मार्मिक, भावात्मक, छोटे-छोटे होकर भी सारपूर्ण और अर्थगर्भित हैं। देशकाल वातावरण में सामाजिक,

महानगरीय, आर्थिक, प्राकृतिक वातावरण चित्रण मिलता है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के देशकाल वातावरण में संक्षिप्तता, वास्तविकता, चित्रात्मकता, वर्णन की सूक्ष्मता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वातावरण की सभी विशेषताएँ विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देती है। वर्मा जी के उपन्यासों का उद्देश्य सामाजिक तथा आर्थिक विषमता को नष्ट करना रहा है।

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों की भाषा-शैली का अवलोकन करने पर यह विदित होता है कि वर्मा जी ने बोलचाल की भाषा, चित्रात्मक भाषा, प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। शब्दयोजना में संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, द्विरुक्त शब्द, जोड़े के साथ आये हुए सादृश्य शब्द, ध्वन्यार्थक शब्द आदि शब्दों का प्रयोग किया है। वाक्य विन्यास में डॉटवाले अंश, छोटे-छोटे वाक्य, अंग्रेजी-हिंदी वाक्य और अंग्रेजी वाक्यों का भी समावेश किया है। जिसके कारण विवेच्य उपन्यासों में प्रभावात्मकता तथा कलात्मकता दृष्टिगोचर होती है।

शैली का संबंध लेखक की रूचि विशेष से है। वह किस उपन्यास को किस शैली में व्यक्त करना चाहता है यह उपन्यास के कथ्य और लेखक की दृष्टि पर निर्भर करता है। सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों को विविध शैलियों में शिल्पित किया है। उनके उपन्यासों में आत्मकथात्मक, संवाद, भाषण, डायरी, काव्यात्मक एवं गीति, पूर्वदीप्ति और वर्णनात्मक आदि शैलियों का प्रयोग कलात्मक रूप से किया है उन्होंने अपने भाषा और शैली के द्वारा समकालीन साहित्यकारों में अपना अलग स्थान बनाया है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों में चित्रित शिल्प, भाषा और कथ्य के स्तर में कई नये संदर्भ उद्घाटित किये हैं।

⇨ लघु शोध-प्रबंध के दौरान निष्कर्ष के रूप में निम्नांकित तथ्य उभरकर सामने आते हैं :

1. वर्मा जी की नारियाँ जीवन और समाज के साथ संघर्षरत रहकर नारी मुक्ति की माँग करती हैं।
2. वर्मा जी के नारी पात्र स्वतंत्र विचारोंवाले हैं।

3. वर्मा जी की नारियाँ पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने के कारण भारतीय संस्कृति बंधन को तोड़ रही हैं।
4. वर्मा जी की नारियाँ महानगरीय जीवन से जुड़ी होने के कारण अवैध यौन-संबंधों के नये-नये आयामों का इस्तेमाल करके यौन तुष्टि को अधिक महत्त्व देती हैं। वर्मा जी ने 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में 'पुरुष-वेश्या' इस नयी संकल्पना को साकार किया है।
5. वर्मा की नारियाँ परिवेशानुकूल परिवर्तन करने में सक्षम दिखाई देती हैं।
6. नारी जीवन के विकास के साथ-साथ उसमें उत्पन्न समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्षत: कह सकते हैं सुरेंद्र वर्मा जी के उपन्यासों में नारी के विविध रुपों, समस्याओं तथा संघर्षपूर्ण जीवन के विविध पहलुओं की सूक्ष्मता के साथ पहल की है।

⇨ उपलब्धियाँ :

1. सुरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व गरिमामय और प्रभावकारी है। साथ ही उनके उपन्यासों में समाज के मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के जन-जीवन का सशक्त चित्रण मिलता है। उनके उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र निरंतर संघर्षरत दिखाई देते हैं।
2. सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों के शीर्षक सपाट बयानी न होकर अभिधात्मक, नवीन एवं प्रतीकात्मक दिखाई देते हैं।
3. विवेच्य उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के संबंधों की पहल की है और नारी के पारंपरिक रूप में नवीनता लाने का सफल प्रयास भी किया है।
4. विवेच्य उपन्यासों में शिक्षा, नगरीय और महानगरीय वातावरण, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तथा प्रेम में नए मूल्यों की स्थापना भी की गई है।
5. नारी मन के अतल गहराई में झाँक कर अनछुए प्रसंगों, स्थितियों, विवाह, प्रेम, यौन, नौकरीपेशा नारियों की स्थिति को भी प्रकट किया है।

---

6. सुरेंद्र वर्मा जी के उपन्यासों में विविध विषयों की पहल की गई है।
7. विवेच्य उपन्यासों में आधुनिकता के नाम पर फैशन से प्रभावित नारी की तड़क-भड़क, व्यसनाधिनता, स्वैराचारी वृत्ति का चित्रण भी दिखाई देता है।
8. विवेच्य उपन्यासों में नारी के बदलते रूप एवं उनके जीवन विशेष को महत्त्व दिया गया है।
9. वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रित आधुनिक नारी बंधनहीन तथा उन्मुक्त जीवन जीना चाहती है।
10. विवेच्य उपन्यासों में नारी की प्रेम और यौन भावना का उद्रेक उनकी स्वच्छंदवृत्ति के कारण रेखांकित है। साथ ही कालानुरुप संस्कार एवं धारणा को परिवर्तित करने की कोशिश दर्शनीय है।
11. सुरेंद्र वर्मा जी आधुनिक उपन्यासकारों में अपनी अलग पहचान रखते हैं।
12. सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों की भाषा में जीवंत रूप देखने को मिलता है और शिल्प उपन्यास को सुंदरता प्रदान करता है।

⇨ अध्ययन की नई दिशाएँ :

वर्मा जी के उपन्यासों पर अनेक विषयों से संबंधित अध्ययन हो चुका है, फिर भी इनमें कुछ विषय छूट गये हैं जिन पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जा सकता है। वे विषय निम्नलिखित हैं -

1. ''सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जीवन''
2. ''मूल्य-विघटन के परिप्रेक्ष्य में सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास''
3. ''सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में चित्रित दांपत्य संबंध''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

❑❑❑❑